जादुई शंख

एक जापानी कहानी

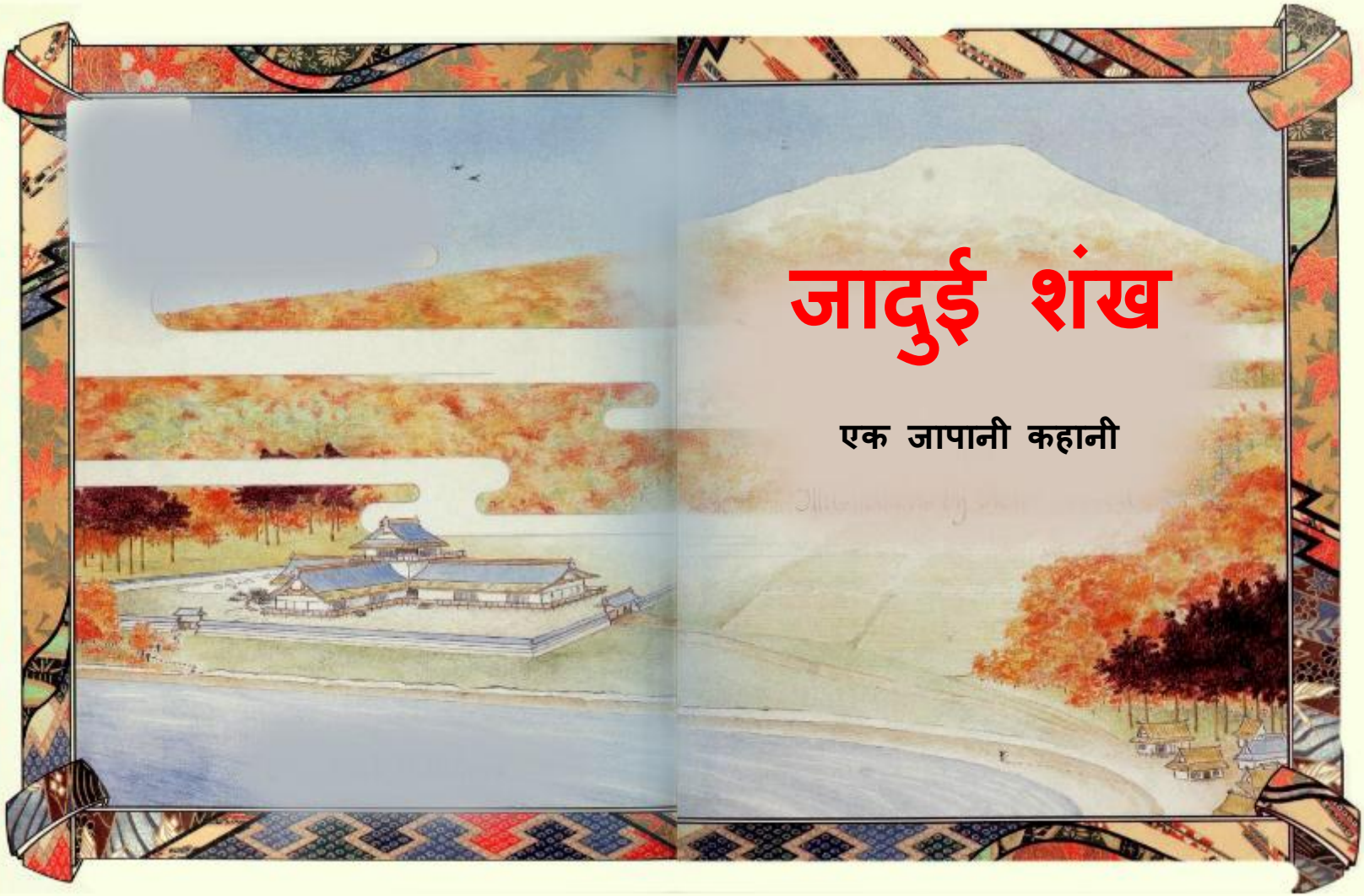
जादुई शंख
एक जापानी कहानी

उत्तरी जापान के एक छोटे से द्वीप पर एक गरीब किसान रहता था. उसका नाम था होदेरी. वह गरीब तो था पर स्वभाव से बहुत ही ईमानदार और दयालु था. एक बड़े जागीरदार के खेतों और बाग़ों में वह मज़दूरी करता था. हर दिन उसे कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी, फिर भी वह सदा प्रसन्न रहता था.

हर सुबह जब समुद्र शांत होता वह समुद्र किनारे चलते-चलते जागीरदार के आलीशान घर की ओर जाता. समुद्र में उठती-गिरती लहरें देख कर उसे बड़ा अच्छा लगता. कभी-कभी वह रुक कर समुद्र किनारे बने ज्वार-तालों में तैरते समुद्री-जीवों को बड़ी उत्सुकता से देखता.

एक सुबह वह जागीरदार के बाग़ की ओर जा रहा था. उसने एक ज्वार-ताल में एक छोटी सी ब्रीम मछली देखी. एक बड़ी और गुस्सैल मछली उस छोटी ब्रीम को खाने के लिये उसके पीछे तेज़ी से आ रही थी. होदेरी ने ज़ोर से ताली बजाई - एक, दो, तीन. ताली की आवाज़ सुनकर बड़ी मछली डर कर समुद्र की ओर वापस चली गई. लेकिन छोटी ब्रीम उस ताल में बेबस-सी यहाँ-वहां तैरती रही.

“तुम्हें इस ताल से चले जाना चाहिये,” होदेरी ने ब्रीम मछली से कहा. “यहाँ पानी बहुत कम है.”

उसने बड़े प्यार से उस छोटी ब्रीम को उठाया और उसे गहरे पानी में डाल दिया और बोला, “झटपट तैर कर वहां चली जाओ जहां वह बड़ी गुस्सैल मछली तुम्हें ढूंढ न पाए.”

छोटी ब्रीम मछली को मुसीबत से बचा कर उसे बहुत प्रसन्नता हो रही थी. फिर वह अपने रास्ते पर चल दिया. वह थोड़ी दूर ही गया था कि उसने किसी की आवाज़ सुनी, “कृपया रुक जाइये, ज़रा मेरी बात सुनिये.”

होदेरी ने मुड़ कर देखा. पीछे एक सुंदर औरत खड़ी थी. उसने बहुत आकर्षक कपड़े पहन रखे थे. जीवन में इतनी सुंदर औरत उसने पहले कभी न देखी थी. होदेरी को लगा कि वह कोई देवी होगी. उस के मन में आया कि देवी जैसी इस औरत को उस जैसे गरीब किसान के साथ क्या काम हो सकता था. बिना कुछ कहे वह मुड़ा और चल दिया.

लेकिन उस औरत ने फिर से पुकारा, "कृपया ठहरिये, मैं आपको ही बुला रही हूँ. मैं नेरिया के राजा की संदेशवाहक हूँ. आपने उनकी इकलौती बेटी की जान बचाई थी. मैं आपको अपने साथ ले जाने आई हूँ. आपको मेरे साथ समुद्र के अंदर नेरिया राज्य चलना है."

"लेकिन," होदेरी ने भोलेपन से कहा, "मुझे तैरना तो आता ही नहीं."

वह औरत मुस्कराई. उसने कहा, "आपको तैरना नहीं पड़ेगा. आप बस मेरे साथ समुद्र किनारे चलें. मैं एक मछली ही हूँ. मैं आपको नेरिया राज्य ले जाउंगी."

होदेरी समुद्र किनारे आया. तब उस औरत ने अपना रूप बदल लिया. वह एक बहुत बड़ी कार्प मछली बन गई. होदेरी उसकी पीठ पर सवार हो गया. उसी पल वह मछली समुद्र के अंदर नेरिया राज्य की ओर चल दी.

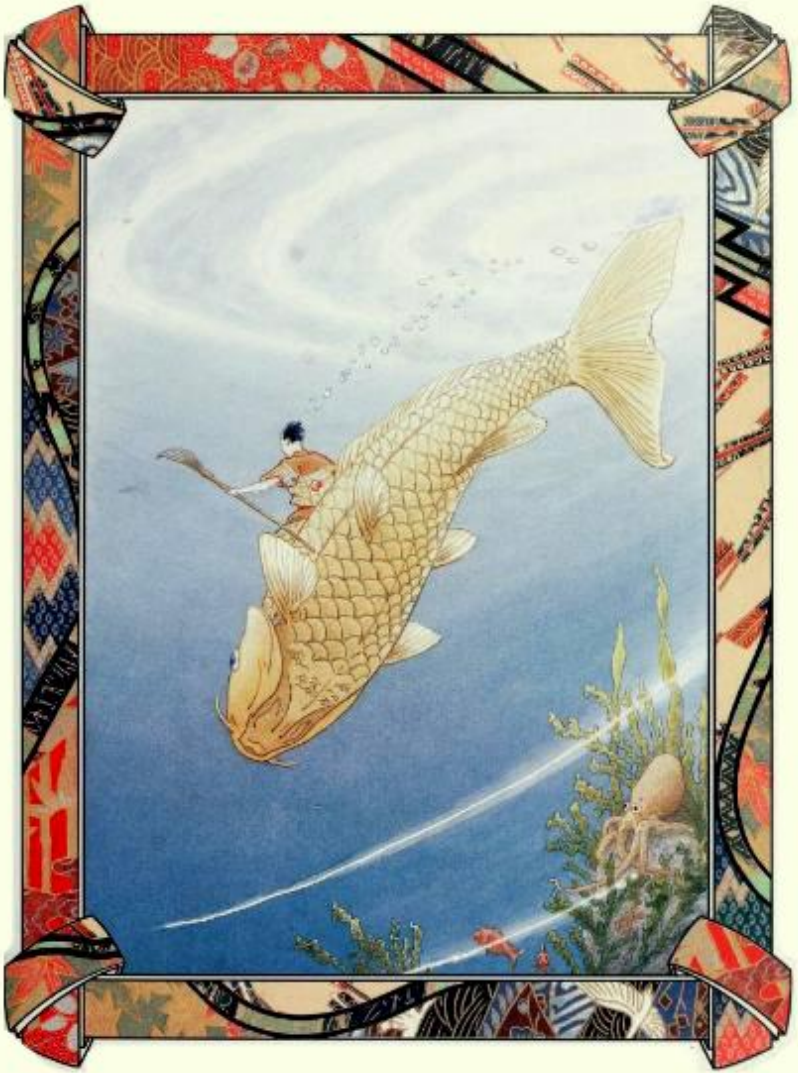

उस विशाल समुद्र के तल पर नेरिया राज्य था. नेरिया का राजा होदेरी का स्वागत करने के लिए अपने महल में उसकी प्रतीक्षा कर रहा था. उसकी प्रजा भी वहीं थी. ड्रैगन राजा ने स्वयं झुक कर उसका अभिवादन किया.

राजा के पास ही उसकी बेटी भी खड़ी थी. यह वही ब्रीम मछली थी जिसे होदेरी ने मुसीबत से बचाया था. अब वह एक सुंदर लड़की के रूप में थी.

राजकुमारी उस औरत से भी अधिक सुंदर थी जो होदेरी को समुद्र किनारे मिली थी. उसके बाल काले और बहुत लंबे थे जो रेशमी बादलों समान पानी में लहरा रहे थे. उसकी सुंदर पोशाक एक लहर के समान झिलमिल चमक रही थी. उसकी वाणी जल-तरंग की आवाज़ की तरह सुरीली और मीठी थी.

“मेरी जान बचाने के लिये आपका बहुत-बहुत धन्यवाद,” राजकुमारी ने कहा, “अगर आप मेरी सहायता न करते तो मैं उस गुस्सैल मछली से कभी न बच पाती. और अगर किसी तरह बच भी जाती तो भी उस छोटे से छिछले ताल में डूब कर मर जाती.”

ड्रैगन राजा और राजकुमारी के सम्मान में होदेरी ने अपना सर झुका दिया. उसने बड़ी विनम्रता से कहा, “अरे, वह तो कोई बड़ा काम न था. इतनी सहायता तो मैं किसी की भी कर देता. और आवश्यकता पड़ने दुबारा भी करूंगा.”

फिर ड्रैगन राजा के महल में जश्न मनाया जाने लगा. बढ़िया दावत हुई, नाच-गाना हुआ. सब ने खूब मज़ा किया. सब प्रसन्नता से झूम उठे. तब ड्रैगन राजा ने होदेरी से कहा, “मेरी बेटी की सहायता करने के लिये मैं तुम्हें कोई भेंट देना चाहता हूँ. तुम जो चाहते हो मांग लो. मैं तुम्हारी हर इच्छा पूरी कर सकता हूँ.”

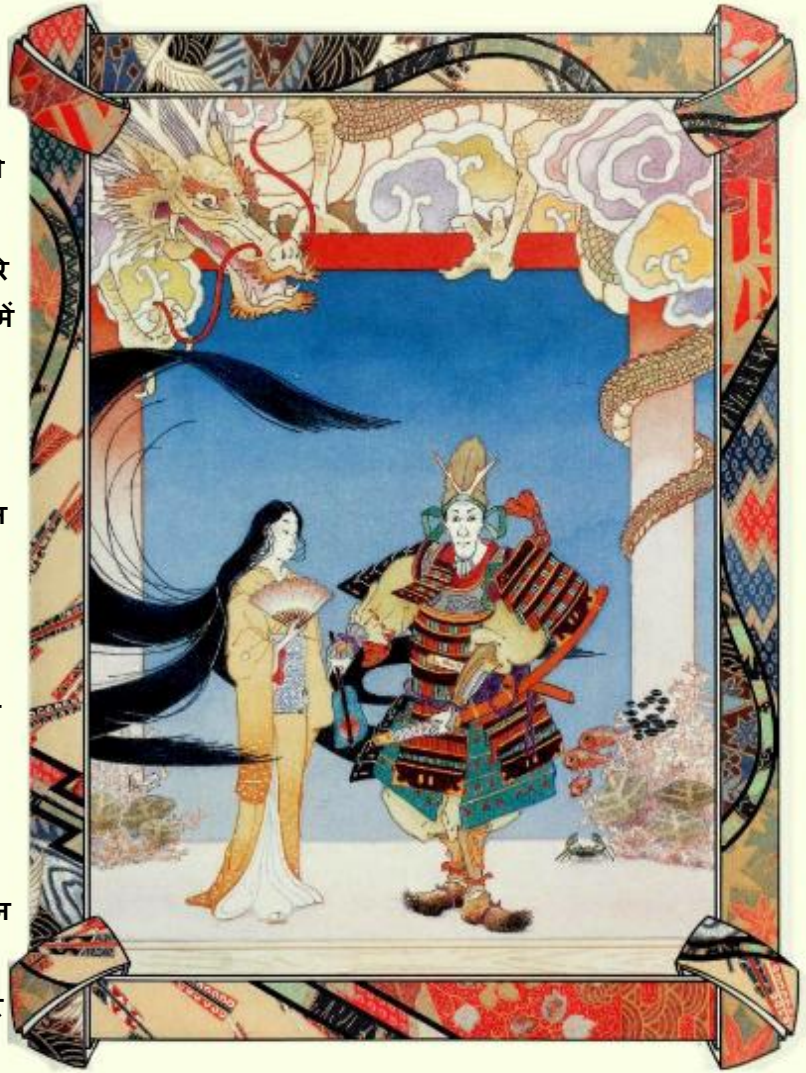

लेकिन लोगों की सहायता करना तो होदेरी का स्वभाव था. ऐसा करके जो खुशी उसे मिलती थी उसी ख़ुशी को वह अपना पुरस्कार समझता था. इसके अतिरिक्त उसके मन में कोई कामना न होती थी. उसने कहा, "महाराज, मुझे आपकी बेटी की सहायता करने का सौभाग्य मिला, मेरे लिये यही बहुत है. मेरी कोई और कामना नहीं है. मुझे कुछ भी नहीं चाहिये."

ड्रैगन राजा ने गंभीरता से अपना सर हिलाया और कहा, "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता. कोई-न-कोई भेंट तो तुम्हें स्वीकार करनी ही पड़ेगी."

होदेरी ने महल में यहाँ-वहां देखा. फिर उसने कहा, "महाराज, अगर ऐसा है तो आप मुझे वह वस्तु दे दें." इतना कह, उसने एक दूध समान सफेद और चमकीले शंख की ओर संकेत किया.

उसके ऐसा करते ही महल में सन्नाटा-सा छा गया. सब एकटक उसे देखने लगे.

"वह!" ड्रैगन राजा ने कहा, "वह तो जादुई शंख है. हमारे राज्य में ऐसा दूसरा एक भी शंख नहीं है."

"महाराज, अगर ऐसा है तो यह शंख यहीं आपके पास रहना चाहिये. कोई पुरस्कार पाने की कामना तो मेरे मन है ही नहीं," होदेरी ने तुरंत कहा.

ड्रैगन राजा कुछ समय तक चुप रहा, वह सोच में पड़ गया था. अंत में उसने कहा, "तुमने मेरी प्रिय बेटी की जान बचाई है. जो कुछ भी हम भेंट में तुम्हें देंगें वह कम ही होगा. तुम्हें यह जादुई शंख लेना ही पड़ेगा."

इतना कह कर राजा ने संकेत किया. एक सेवक उस शंख को अपने स्थान से उठा कर ले आया और बड़े सम्मान के साथ उसे होदेरी को भेंट स्वरूप दे दिया.

होदेरी ने शंख संभाल कर थाम लिया और उस बड़ी कार्प मछली की पीठ पर बैठ गया जो उसे समुद्र के अंदर लाई थी. वह मछली अब उसे वापस धरती पर ले आई.

धरती पर पहुँच कर उस मछली ने औरत के रूप में आकर उससे कहा, “यह जादुई शंख बहुत ही अनमोल है. यह तुम्हारे जीवन को खुशियों से भर देगा. इसकी सहायता से तुम हर प्राणी की बात समझ पाओगे. परन्तु इस शंख को उन लोगों से छिपा कर रखना जो अपने स्वार्थ के लिए इसका उपयोग करना चाहते हैं.”

अब होदेरी झटपट जागीरदार के घर की ओर चल दिया. रास्ते में उसे एक पेड़ पर कुछ पक्षियों कि चहचाहट सुनाई दी. उसने सोचा कि जादुई शंख की जांच करने का यह अच्छा अवसर था. उसने शंख को अपने कान पर लगाया. उसने सुना, “यह मनुष्य सोचते हैं कि वह सब बहुत चतुर और बुद्धिमान हैं, पर वह कुछ भी नहीं जानते. इस पेड़ के नीचे जो पत्थर पड़ा है वह एक सोने की शिला है. लेकिन आज तक किसी को इस बात का पता नहीं चला.”

पक्षियों की बातें सुन कर होदेरी आश्चर्यचकित हो गया. वह उस पेड़ के पास आया जिस पर पक्षी बैठे थे. वहां नीचे एक पत्थर था जो काई से पूरा ढका हुआ था. उसने वह पत्थर उठाया और पाजामे के कपड़े से उसे रगड़ कर साफ़ किया. काई हटने पर उसे चमकदार सोना दिखाई दिया. होदेरी ने उस सोने की शिला को अपने कोट के भीतर छिपाकर रख लिया.

जादुई शंख और सोने की शिला को अच्छे से छिपाये हुए, वह जागीरदार के घर पहुंचा. वहां घर के दरवाज़े पर उसे एक नोटिस दिखाई दिया. नोटिस पर लिखा था, 'जो कोई भी मेरी बीमार बेटी को ठीक कर देगा उसे मुंह माँगा ईनाम मिलेगा.'

अब होदेरी जानता था कि जागीरदार की एक ही बेटी थी. बाग़ में काम करते समय उसने कई बार उस लड़की को देखा था. वह रंग-बिरंगे कपड़े पहने रहती थी. वह सदा मुस्कराती रहती थी. बाग़ के जिस मंडप में चाय-समारोह आयोजित किया जाता था उस मंडप के पास एक लाल चिनार के पेड़ के नीचे वह अकसर खड़ी रहती थी. बाग़ में पक्षियों और अन्य जीवों को वो केक के टुकड़े खिलाया करती थी.

मन ही मन होदेरी उसे 'इंद्रधनुष राजकुमारी' बुलाया करता था.

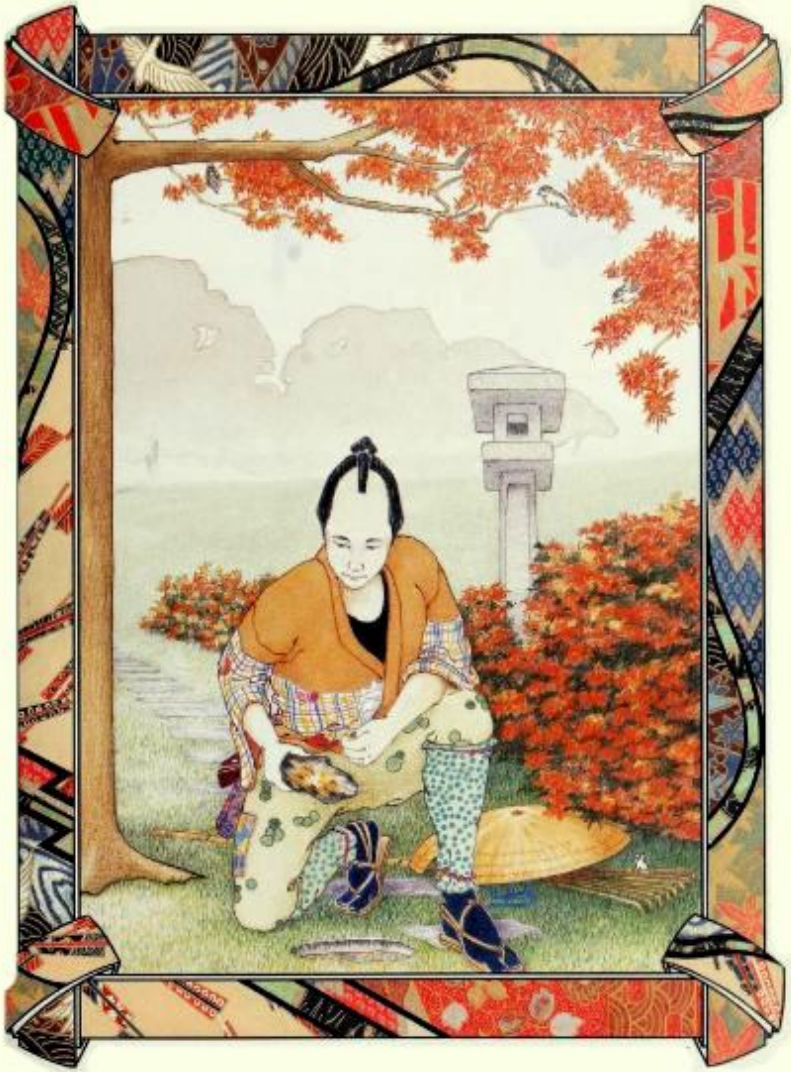

वही 'इंद्रधनुष राजकुमारी' बीमार थी. जीवन में पहली बार होदेरी उदास हो गया. उसने तय किया कि वह उस लड़की की सहायता करेगा. वह झटपट जागीरदार के घर के भीतर आया और अपने आने का कारण बताया.

जागीरदार के सामने वह सम्मान में सर झुका कर खड़ा हो गया और बोला, "मैं आपकी बेटी की सहायता करना चाहता हूँ. मैं उसकी बीमारी ठीक कर सकता हूँ."

उसकी बात सुन, जागीरदार के पास बैठे लोग हंस दिये. लेकिन जागीरदार स्वयं चुप रहा. उसके पास बैठे लोग प्रसिद्ध डॉक्टर थे जिन पर जागीरदार को बहुत विश्वास था.

"अगर हम उस लड़की का इलाज नहीं कर पाये तो यह फटीचर गंवार क्या कर पायेगा?" डॉक्टरों ने उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहा.

लेकिन जागीरदार अपनी बेटी से बहुत प्यार करता था. वह चाहता था कि उसकी बेटी शीघ्र स्वस्थ हो जाये और फिर से बाग़ में घूमे-फिरे. फिर से पक्षियों और अन्य जीवों को केक के टुकड़े खिलाये.

"उसके पास जाओ और देखो कि उसे क्या हुआ है," उसने होदेरी को आदेश दिया.

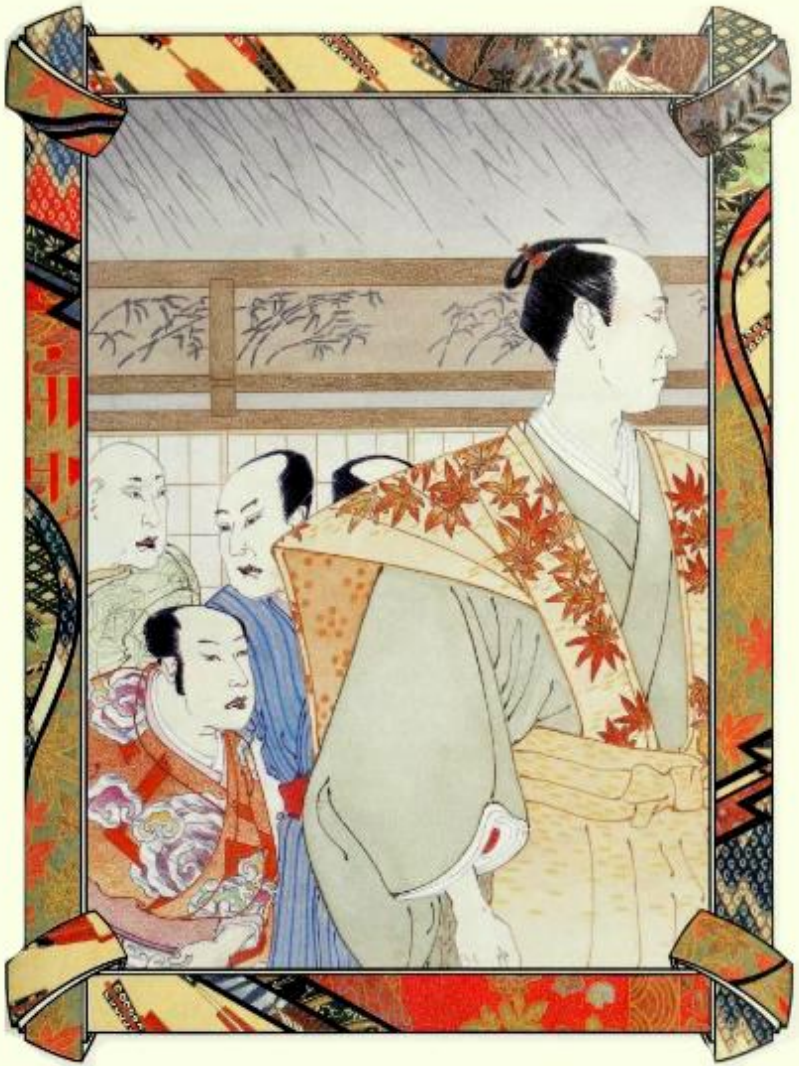

एक बूढ़ी औरत होदेरी को 'इंद्रधनुष राजकुमारी' के कमरे में ले गई. लड़की चुपचाप, आँखें बंद किये अपने बिस्तर पर लेटी थी. उसका चेहरा उतरा हुआ था और सांस बहुत धीमी चल रही थी.

होदेरी ने कोट के अंदर छिपा कर रखा जादुई शंख निकाला और उसे अपने कान पर लगाया. उसे विश्वास था कि शंख की सहायता से उसे पता चल जायेगा कि 'इंद्रधनुष राजकुमारी' को क्या हुआ था.

परन्तु बहुत ध्यान से सुनने पर भी होदेरी को कुछ सुनाई न दिया. वहां आसपास कोई पशु-पक्षी न थे जो बता पाते कि, उन्हें केक के टुकड़े खिलाने वाली, 'इंद्रधनुष राजकुमारी' को क्या हुआ था. कमरे में एक मच्छर तक न था जो उसे कोई जानकारी दे पाता.

निराश होकर वह जागीरदार के पास वापस आ गया. उसने ईमानदारी से कहा, "अभी मुझे कुछ पता नहीं लगा. लेकिन मैं शीघ्र ही आपके पास सही जानकारी लेकर आऊंगा."

सब डॉक्टर खूब जोर से उस पर हंस दिए. होदेरी चुपचाप वहां से चल दिया और बाग़ में काम करने आ गया.

काम करते-करते उसे महसूस हुआ कि बाग़ में पूरी खामोशी छाई थी. चिनार के पेड़ पर भी कोई पक्षी न थे. बांस के झुरमुट में रहने वाला बड़ा सैल्मैन्डर भी अपनी जगह में न था.

वह देर तक बाग़ में काम करता रहा. उसे आशा थी कि रात होने पर बड़ा सैल्मैन्डर वापस आ जाएगा या फिर मंडप के पास वाले तालाब में छोटा मेंढक लौट आएगा. रात हो गई लेकिन कोई भी प्राणी बाग़ में लौट कर न आया.

अंत में जब आकाश में तारे चमकने लगे और होदेरी घर लौटने की तैयारी करने लगा तब उसे उल्लू की आवाज़ सुनाई दी.

उसने तुरंत अपना जादुई शंख निकाला और कान पर लगा कर उल्लू की बात सुनने लगा. उल्लू कह रहा था, “इस संसार की सारी दवाइयां और सारे डॉक्टर भी जागीरदार की बेटी को ठीक न कर पायेंगे. जब जागीरदार के घर की छत पर छप्पर डाला जा रहा था उस समय एक सांप उस छप्पर में फंस गया था. अगर उस सांप को वहां से बाहर निकाल कर खाने को कुछ दिया जाये तो वह लड़की निरोगी हो जायेगी.”

होदेरी ने अपना जादुई शंख अपने कोट के अंदर छिपा कर रख लिया और तुरंत जागीरदार के पास गया.

“मैं जानता हूँ कि आपकी बेटी के साथ क्या हुआ है,” उसने जागीरदार से कहा, “उसे एक सांप का श्राप लगा है. वह सांप इस घर की छप्पर में फंसा हुआ है. उस सांप को तुरंत बाहर निकालना होगा और उसे खाने को कुछ देना होगा.”

सब डॉक्टर ज़ोर से हंस दिये और उसका मज़ाक उड़ाने लगे.

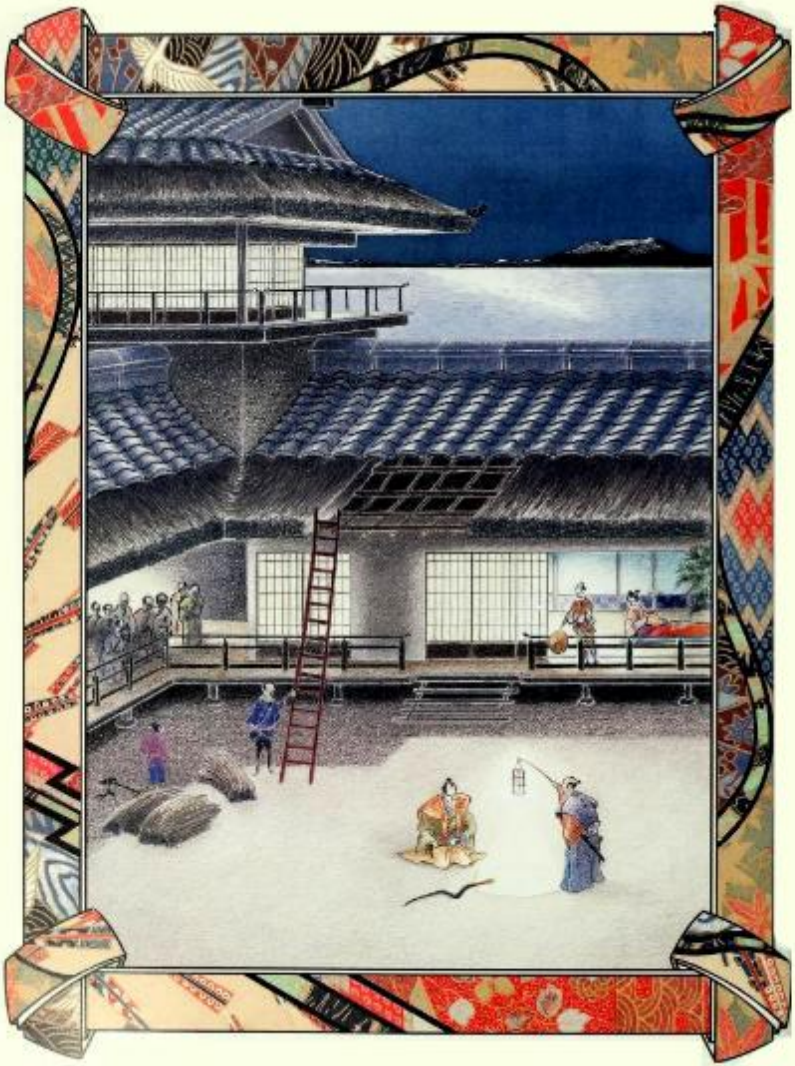

लेकिन जागीरदार अपनी बेटी को बहुत प्यार करता था. वह चाहता था कि उसकी बेटी जल्दी स्वस्थ हो जाये और फिर से बाग़ में मस्ती से टहले.

'अभी जाकर छप्पर लगाने वालों को बुलाओ," उसने आदेश दिया, "उनसे कहो कि इस घर का सारा छप्पर उखाड़ फेंकें."

रातों-रात छप्पर लगाने वालों को उनके घरों से बुलाया गया. आते ही वह सब जागीरदार के घर की छत से छप्पर उखाड़ने लगे. जल्दी ही उन्हें छप्पर की घास में फंसा एक सांप दिखाई दिया. भूख से सांप अधमरा हो गया था और बेचारा बहुत तकलीफ में था.

जागीरदार ने स्वयं उस सांप को कुछ चावल खाने के लिए दिए. सांप ने धीरे-धीरे थोड़े से चावल खाए. चावल खाकर वह थोड़ा हिलने-डुलने लगा. उसके हिलते-डुलते ही 'इंद्रधनुष राजकुमारी' अपने बिस्तर में उठकर बैठ गई.

"इसे और चावल खिलाओ," होदेरी ने जागीरदार से कहा. सांप को और चावल खिलाये गए. अब वह रेंगते-रेंगते आगे जाने लगा. तभी 'इंद्रधनुष राजकुमारी' मुस्कराती हुई अपने बिस्तर से उठकर बाहर आ गई.

जागीरदार की ख़ुशी का ठिकाना न रहा. होदेरी के सामने वह झुक कर खड़ा हो गया और बड़ी विनम्रता से बोला, “तुमने ही मेरी बेटी को स्वस्थ किया है. इस उपकार के लिये मैं तुम्हें कोई भेंट देना चाहता हूँ. तुम्हें जो चाहिये वह मांग लो.”

लेकिन होदेरी को दूसरों की सहायता कर जो सुख मिलता था उसके लिये वही सुख ही सबसे बड़ा पुरस्कार था.

“मेरी कोई भी कामना नहीं है,” उसने उत्तर दिया. लेकिन जीवन में पहली बार उसने ईमानदारी से बात न की थी. एक ऐसी चीज़ थी जिसे वह संसार में सबसे अधिक चाहता था. वह ‘इंद्रधनुष राजकुमारी’ को बहुत प्यार करता था और उससे विवाह करना चाहता था.

“तुम्हारी मन में कोई तो कामना होगी? कृपया मुझे बताओ. मुझे तुम्हारी कोई इच्छा पूरी कर के बहुत ख़ुशी मिलेगी,” जागीरदार ने कहा.

होदेरी ने ‘इंद्रधनुष राजकुमारी’ की ओर देखा. वह बहुत ही सुंदर थी, बहुत ही भली थी. अंत में उसने कह दिया, “मैं आपकी बेटी के साथ विवाह करना चाहता हूँ.”

उसकी बात सुनकर सब डॉक्टर खिलखिला कर हंस दिए, “आप इस गरीब, फटीचर किसान के साथ अपनी बेटी का विवाह कैसे कर सकते हैं? कभी नहीं कर सकते.”

लेकिन जागीरदार ईमानदार आदमी था और अपनी बात का धनी भी था. उसने होदेरी की इच्छा पूरी करने का वचन दिया था. वह बहुत समझदार भी था. वह जानता था कि अगर उसने अपने किसानों को नाराज़ किया तो वह उसको हानि भी पहुंचा सकते थे.

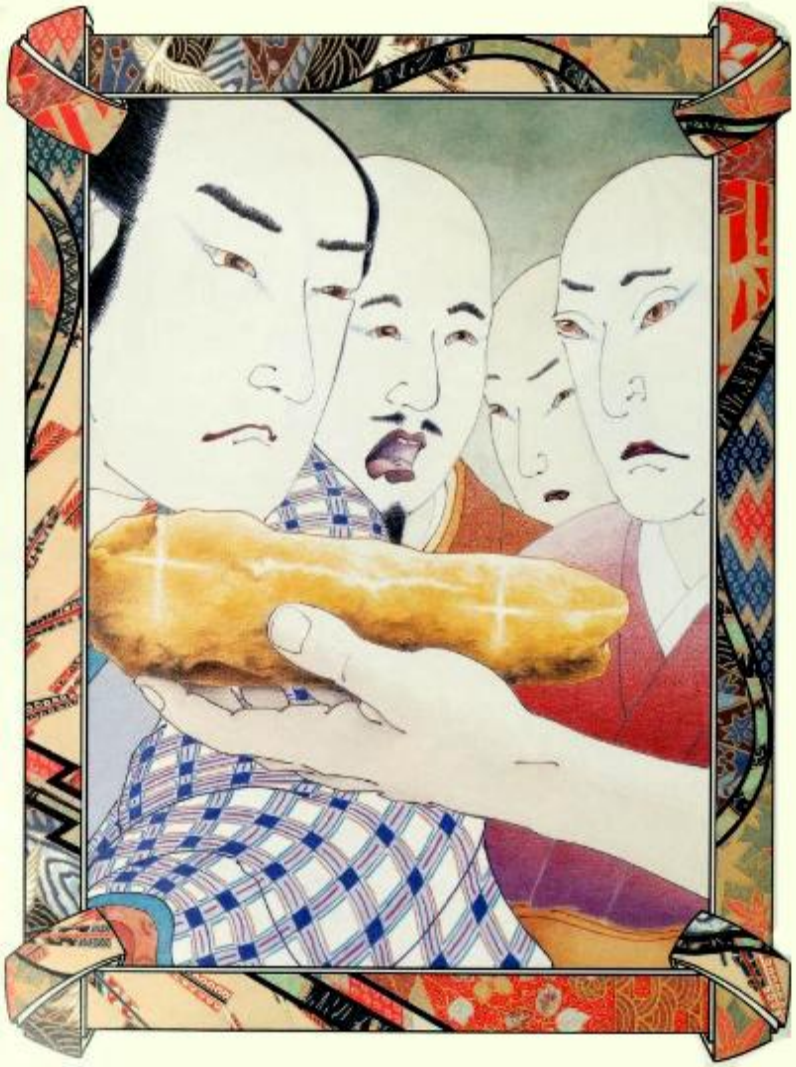

उसने खूब सोच-विचार कर होदेरी से कहा, “ठीक है, मैं अपनी बेटी का विवाह तुम्हारे साथ कर दूंगा. परन्तु मेरी एक शर्त है, तुम्हारे पास इतना धन होना चाहिये कि तुम मेरी बेटी की जीवनभर अच्छी देखभाल कर पाओ.”

जागीरदार की बात सुन डॉक्टर अपनी हंसी रोक न पाये. इस फटीचर गंवार के पास इतना धन कहाँ होगा कि यह जागीरदार की बेटी से विवाह कर पायेगा, यही सोच कर वह सब खूब हंस रहे थे. हंसते-हंसते उनके पेट में बल पड़ने लगे थे.

लेकिन होदेरी ने अपने कोट में छिपा कर रखी सोने की शिला जागीरदार को दिखाई और कहा, “मुझे लगता है कि इतना धन आपकी बेटी और हमारे बच्चों की जीवनभर देखभाल करने के लिए पर्याप्त होगा.”

अब डॉक्टरों का हंसना-खिलखिलाना बिलकुल बंद हो गया. वह सब आँखें फाड़-फाड़ कर सोने की शिला को देख रहे थे.

लेकिन जागीरदार ने मुस्करा कर कहा, “हाँ, इतना तो बहुत ही पर्याप्त होगा.”

होदेरी और 'इंद्रधनुष राजकुमारी' का विवाह हो गया. वह दोनों जागीरदार के घर में ही बड़े आनंद से रहने लगे.

हर सुबह होदेरी और उसकी पत्नी बाग़ में बने मंडप में जाकर बैठ जाते. अपने साथ वह बहुत सारे केक के टुकड़े ले जाते और पक्षियों और अन्य जीवों को खिलाते. कोई उन्हें देख न पाये, इसलिये सब के जागने से पहले ही, वह दोनों बारी-बारी जादुई शंख कान पर लगा कर सब जीवों की बातें सुनते.